International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

गिरिराज किशोर की कहानियों में राजनैतिक वस्तु–विधान

डॉ० कृष्णा देवी
सहायक प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

समकालीन कहानिकारों में गिरिराज किशोर का स्थान सर्वोपरि है। उनके पास अपने अनुभव हैं जिसे वे केवल देखते–परखते ही नहीं अपितु रचना के धरातल पर उतारते हैं।

आधुनिक एवं वैज्ञानिक जीवन दृष्टि के कारण जहाँ मनुष्य तेजी से परिवर्तित हो रहा है। वहीं दूसरी ओर जीवन जटिल बनता जा रहा है। ऐसी स्थिति में मनुष्य की अस्मिता और अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लग जाता है। सारे सन्दर्भ एवं स्थितियाँ समय के साथ बदलती जा रही हैं। जिसमें मनुष्य के लिए राह बनाना मुश्किल होता जा रहा है। वर्तमान जीवन की गति और स्थिति को रचनात्मक धरातल पर अभिव्यक्ति देने का ईमानदार और सार्थक प्रयास जिन कहानीकारों ने किया है, उनमें गिरिराज किशोर का नाम अग्रगण्य है।

राजनैतिक वस्तु–विधान का तात्पर्य राजनीतिक विषय वस्तु से है जिसमें व्यक्ति और शासन व्यवस्था की संकल्पना का अंतर्भाव होता है। आधुनिक वर्तमान युग में 'राजनीति' शब्द का प्रयोग विविध क्षेत्रों में प्रयुक्त हो रहा है। किसी गली–मुहल्ले की राजनीति से लेकर दफ्तर, स्कूल, कॉलेज, विधानसभा, लोकसभा, चुनाव एवं किसी संघर्ष को भी राजनीति के परिप्रेक्ष्य में देखा जा रहा है। अतः जीवन को प्रभावित करने वाली नीति की संकल्पना को स्थूल रूप से ही क्यों न हो देखना जरूरी हो जाता है।

राजनीति शब्द का अर्थ है, ''राज्य की रक्षा और शासन को दृढ़ करने का उपाय बताने वाली नीति।''[1]

वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति से प्रभावित रहता है। परन्तु आज की राजनीति में चारों और स्वार्थ, पदलोलुपता, भ्रष्टाचार आदि का बोलबाला है। ऐसे परिवेश में राजनेताओं द्वारा संचालित शासन–व्यवस्था में जीवन जीना दुष्कर होता जा रहा है। परिणामस्वरूप राजनीति और उसके तंत्र से लोगों का विश्वास उठता जा रहा है। इसी तथ्य का अंकन गिरिराज किशोर की कहानियों में हुआ है।

वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य की सबसे बड़ी विसंगति राजनीतिक व्यवस्था का भ्रष्ट एवं मूल्यहीन होना है। गिरिराज किशोर की 'पेपरवेट', 'प्रत्याशा', 'मंत्रीपद' कहानियाँ इसी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

'पेपरवेट' कहानी राजनैतिक मूल्यों के विघटन को अभिव्यक्त करती हैं। वर्तमान युग में प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली अपने मूल आदर्शों से हटकर किसी एक व्यक्ति के इर्द–गिर्द डिक्टेटरशिप–सी घूमती दिखाई दे रही है। अपनी प्रतिष्ठा, स्वार्थ एवं नाम बनाए रखने हेतु प्रयुक्त होती कूटनीति सही अर्थों में प्रजातन्त्र का गला घोट रही है। ऐसे में राजनीति के दुष्चक्र में फँसे व्यक्ति को घुटन एवं जानलेवा मानसिक यातनाओं से गुजरना पड़ रहा है। इस राजनैतिक मूल्यहीनता को प्रस्तुत कहानी में रूपायित किया गया है।

कहानी में मृणालबाबू एक स्पष्टवादी, ईमानदार एवं आदर्श विधायक हैं। वे सत्ताधारी पक्ष के होने के बावजूद सरकार की नीति का यथायोग्य विरोध भी करते हैं। विरोधियों से उठे विरोध को शांत करने के लिए मुख्यमंत्री शिवनाथ बाबू उन्हें मंत्री बनाते हैं। उनकी साजिश भरी राजनीति के प्रभावस्वरूप मृणाल बाबू या अन्य मंत्रियों की स्थिति कठपुतलियों–सी बनती है। जिसकी डोर मुख्यमंत्री के हाथों में है। मंत्री बन जाने के बाद की स्थिति उनकी अस्तित्वहीनता को स्पष्ट करती है, "विभाग के काम में भी एक अजीब तरह का परिवर्तन आ रहा था। जो भी फाइल विभाग से मांगी जाती

थी। पता चलता था मुख्यमंत्री के पास है। वह भी मुख्यमंत्री के यहाँ गया हुआ होता था।''[2]

ऐसी अपमानास्पद अवस्था में वे त्यागपत्र देने का विचार भी करते हैं, पर कुप्रचार के डर से ऐसा नहीं करते। उन्हें जब मुख्यमंत्री से औद्योगिक मसले के सन्दर्भ में सरकार की नीति निर्धारण के पूर्व निर्णय की फाइल प्राप्त होती है। तो उन्हें महसूस होता है कि वे नाममात्र मंत्री हैं, सही निर्णय तो मुख्यमंत्री ही लेते हैं। उनका अस्तित्व मानो मेज़ पर रखे 'पेपरवेट' जैसा है, जो मुख्यमंत्री के इशारों पर घूमते रहने के लिए विवश है। 'प्रत्याशा' कहानी में चुनाव के समय राजनेताओं द्वारा प्रयुक्त धूर्तनीति एवं दल–बदल की प्रवृत्ति को अभिव्यक्त किया गया है। किशन बाबू एक सिद्धान्तवादी राजनेता हैं। उन्हें जोड़–तोड़ एवं गुटबंदी की राजनीति नहीं आती। मंत्रीकाल के दौरान उन्होंने अपनी सक्षम कार्यक्षमता से प्रधानमंत्री और पार्टी के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। ऐसी स्थिति में भी चुनाव के लिए पार्टी का टिकट उन्हें नहीं, बल्कि किसी और को ही मिलता है।

उन्हें टिकट न मिलने के कारण उनकी पत्नी रमला बहन किसी दूसरी पार्टी की सदस्य बनकर चुनाव लड़ने में जुट जाती हैं। वे सोचते हैं कि क्या उनकी पत्नी जीत जाएगी ? राजनीति की इस स्थिति को लेकर उन्हें याद आता है, ''बचपन के दिनों में लिखने के लिए दवात का इस्तेमाल होता था। अक्सर दवात उलट जाती थी। रोशनाई बिखरकर फैल जाती थी। वह यह नहीं देखती कि मेज़ है, इबारत लिखी कॉपी या कालीन। उन्हें लगा, राजनीति भी रोशनाई ही है। जो फैलती जा रही है। जब तक इस रोशनाई का सही इस्तेमाल होता है तो यह खुशख़त इबारत देती है और जब बिखरकर फैलती है, सब कुछ अपने में गर्क कर लेती है। उन्हें एकाएक लगा कि रोशनाई उलट गई।''[3]

कहानी इस प्रश्न की ओर संकेत करती है कि टिकट के लिए अपने सिद्धान्तों को त्याग कर दूसरी पार्टी का दामन थामना मानवीयता के दायरे में यथायोग्य है ?

अपने निजी स्वार्थों एवं हितों की रक्षा के लिए जनता को दिए आश्वासनों का गला घोंटकर सत्ता लिप्सा में लीन राजनेताओं को इस कहानी में बेनकाब किया गया है।

'मंत्रीपद' कहानी में नेताओं की सत्ता–लिप्सा एवं जनसेवा की ढ़ोंगी प्रवृत्ति को समस्त रूप में उजागर किया गया है। कहानी के पंडित जी पूर्व मंत्री और वर्तमान सांसद हैं। वे सत्ता से बाहर होने पर पुनश्चः सत्ता में बने रहने के लिए सतत् प्रयत्नशील दिखाई देते हैं। उनकी दृष्टि में मंत्री पद सोना है। अपने मंत्री–काल में इस सोने ने उन्हें काफी उलझाए रखा था। बाद में उन्हें भ्रष्टाचार के मामले में अपने मंत्री पद से हाथ धोना पड़ा था। वे वर्तमान राजनीत के सन्दर्भ में अपनी प्रशंसा हेतु कहते हैं, ''बड़ा दुःख होता है। मंत्री लोग शाहों में नौकरशाह है। जनतंत्र में नौकरशाह ही सबसे बड़ा शाह होता है। बाकी सब तो गुलाम हैं। वे लोग जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों जैसा व्यवहार नहीं करते। उनका जनता से सम्पर्क ही नहीं है। उनका तामझाम राजकुमारों वाला है। गांधी जी की आत्मा क्या कहती होगी ? क्या मैंने इसलिए आज़ादी की लड़ाई लड़ी थी ? पटेल की आत्मा रोती होगी। जब राजकुमारों को रहना ही था तो बेकार ही मैंने कदीमी रजवाड़ों का खात्मा किया।''[4]

उपर्युक्त कथन से जननायकों के जयघोष की दुहाई देकर स्वयं को लोगों में प्रतिष्ठित बनाए रखने की उनकी दोगली प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

समसामयिक राजनैतिक परिदृश्य का विकृत रूप शासन व्यवस्था में व्याप्त अकर्मण्यता में देखा जा सकता है। अपने मूल आदर्श एवं कर्त्तव्य की भावना से राजनीति किस तरह दूर होती जा रही है, इसका सशक्त अंकन गिरिराज किशोर ने किया है।

'रेप' कहानी शासन व्यवस्था की अकर्मण्यता और जन–प्रतिनिधियों की नपुंसक कार्य प्रणाली की पोल खोलती है। शहर में खुलेआम लड़कियाँ रेप की शिकार हो रही हैं। उनकी हिफाज़त या गुंडों पर पाबंदी लगाने के लिए कुछ करने के बजाय

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

एम०एल०ए० चंद्रिका बाबू कहते हैं, ''अब देखिए, भले घर की लड़कियों के साथ दिन–दहाड़े क्या हुआ है, पब्लिक जाने या पुलिस। हमें क्या लेना–देना।''[5]

यह कथन उनकी अकर्मण्यता और निकम्मेपन का प्रमाण है। 'नया चश्मा' कहानी कुर्सी से प्रभावित राजनीति के घिनौने रूप की प्रतीकात्मक प्रस्तुति है। राजनीति में कुर्सी या पद ही एक ऐसा महत्त्वपूर्ण तत्व बन गया है, जिसके प्रभाव से सारे संदर्भ बदल रहे हैं। कहानी के शिवजी भाई सत्ताधारी पक्ष के विधायक हैं। स्पष्टवादिता और सत्यनिष्ठापूर्ण व्यवहार ही उनकी पहचान है, जिसके कारण मंत्रियों एवं मुख्यमंत्री को कई बार परेशान होना पड़ा है। उनके सरकारी प्रस्ताव के विरोध में भाषण देने से स्थिति और भी विकट बनती हैं। मुख्यमंत्री अपनी साजिशों, पैंतरेबाजी द्वारा उन्हें फँसाने में सफल होते हैं। वे मंत्री पद के लालच में अपना रवैया बदलने की अप्रत्यक्ष हामी मुख्यमंत्री के पैरों पर झुककर देते हैं और इसी समय उनका पुराना चश्मा गिर जाता है, ''झुकते ही शायद उनका चश्मा गिर गया था लेकिन पुराने चश्में के लिए मुख्यमंत्री को तकलीफ देने की बात सोचकर उन्हें अपने ऊपर हँसी आने लगी। नया चश्मा खरीदने की बात सोचकर वे दरवाजे से ही लौट पड़े।''[6]

यहाँ पुराना चश्मा गिरना एवं नया चश्मा खरीदने की बात प्रतीकात्मक रूप से शिवजी भाई के सिद्धान्तों के पतन एवं सत्ता प्राप्ति के मोह को सूक्ष्मता से स्पष्ट करती है।[7]

गिरिराज किशोर ने राजनीति और भ्रष्ट व्यवस्था के यथार्थ को व्यंग्य के रूप में प्रस्तुत किया है। 'चीख' कहानी में राजनीति का व्यंग्य चित्र ही प्रस्तुत हुआ है। इसमें मंत्रियों एवं शासन व्यवस्था की अकर्मण्यता को अप्रत्यक्ष रूप से चौराहे पर ला खड़ा किया गया है। कहानी में मंत्री जी को संदेह है कि साक्षात्कार में 'राष्ट्र–आत्मा' शब्द का बार–बार प्रयोग हुआ है। उनकी धारणा है कि राष्ट्र–आत्मा जैसा शब्द आज की राजनीति के परिप्रेक्ष्य में उचित नहीं है। इसलिए वे रिकार्डिंग में से उसे निकलवाना चाहते हैं। एडीटर दामोदर को जी–तोड़ मेहनत करके भी 'राष्ट्र–आत्मा' नहीं मिलती।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

उनके कथन में व्यंग्य उभरकर सामने आता हैं, ''मंत्री जी जब बोल रहे थे तो वह उनके पास मीलों तक नहीं थी। हाँ, अलबता बलात्कार, भ्रष्टाचार, बेइमानी, शोषण, आतंकवाद, ऐय्याशी, बेरोज़गारी वगैरह तब भी यथावत थे, अब भी मौजूद हैं।''[8]

टेप को बार–बार चेक करने पर पता चलता है कि 'राष्ट्र–आत्मा' तो नहीं, पर बहुत दूर से किसी श्रोता की दबी हुई चीख सुनाई पड़ती है। वह चीख है देश के मरणासन्न नागरिकों की। उनकी आत्मा तो कब की मर चुकी है।

'रेड' कहानी सरकार की नीति की असफलता एवं अव्यावहारिकता पर करारा व्यंग्य है। किसी भी विषय के संबंध में नीति या नियम बनाते समय उसका कठोर पालन ही सरकार के केन्द्र में होता है, पर साथ ही नीति की व्यावहारिकता की ओर व्यवस्था का ध्यान देना उचित होता है। समकालीन परिप्रेक्ष्य में सरकार की पॉलिसी या नीति के संबंध में भी यही दिखाई देता है कि नीति नियमों का पालन ही महत्त्वपूर्ण है उनकी व्यावहारिकता गौण।

कहानी में इनकम टैक्टस की रेड सरकार की नीति का ही एक पहलू बनकर उभरता है। अधिक धन या काले पैसे को लोगों के पास से निकलवाने के लिए सरकार किसी पर भी रेड कर सकती है। पर इस रेड में कुछ बरामद न हुआ तो व्यक्ति की बेइज्जती और उसके मुआवजे को लेकर खामोश हो जाती है। छोटे अफसर का कथन द्रष्टव्य है, ''सरकार किसी को भी चिता पर बैठा सकती है। किसी के पास हो या न हो, सरकार अपने कानों के कच्चेपन की वजह से घर की एक–एक ईंटे उखड़वा डालेगी।''[9]

यह कथन सरकार की अव्यावहारिकता एवं असफलता को स्पष्ट करता है। कहानी में प्रश्न उपस्थित किया गया है कि मिनिस्टर्स के यहाँ रेड क्यों नहीं होती ? जाहिर है कि नीति बनाने वाले ही उसे अपने से दूर रखते हैं। संक्षेप में यहाँ सरकार की नीति की अव्यावहारिकता तो स्पष्ट होती ही है, साथ ही अमानवीयता भी।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

'वी०आई०पी०' कहानी राजनीति के अनुकरण सिद्धान्त को व्यंग्यात्मक रूप से अभिव्यक्त करती है। बड़े–बड़े नेताओं से अपना करीबी संबंध होने और उनका सच्चा अनुयायी होने की बात को अतिशयोक्तिपूर्ण ढ़ंग से प्रस्तुत कर लोगां में अपना प्रभाव रखने का प्रयास करने वाले लोगों पर यह कहानी करारा व्यंग्य करती है। कहानी में 'वह' जैसे राजनेताओं के कई चाटुकार समकालीन परिप्रेक्ष्य में हमारे इर्द–गिर्द देखे जा सकते हैं। जो स्वयं अभावग्रस्त है, पर अपने आपको महत्त्वपूर्ण बनाये रखने के लिए किसी न किसी बड़े नेता से अपना संबंध बताते हैं। 'वह' स्वयं को मुख्यमंत्री जी का सच्चा अनुयायी दर्शाकर समाज में अपने आपको वी०आई०पी० बनाये रखने का अथक प्रयास करते दिखाई देता है। बाबू जी के सिद्धान्त, रहन–सहन, आचार–विचार का उस पर इतना गहरा प्रभाव है कि "जब उसे बाबू जी कहा जाता है तो उसके दोनों हाथ फौरन टोपी पर पहुँच जाते हैं और टोपी की बाड़ सहलाने लगते हैं। सुना है बाबूजी की भी कुछ ऐसी ही आदत है। वे भी जब खाली होते हैं तो अपनी टोपी पर हाथ–फेरा करते हैं। टोपी तराशी हुई पैंसिल की नोंक की तरह खड़ी होती है। लेकिन मेरे दोस्त (वह) को एक ही टोपी कई–कई दिन पहननी पड़ती है। कभी–कभी घर पर भी धोनी पड़ जाती है। इसलिए उसकी टोपी वैसी नहीं रह पाती।"[10]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गिरिराज किशोर ने राजनीति और शासन व्यवस्था को समकालीन परिप्रेक्ष्य में मूल्य विघटन और यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है। साथ ही उन्होंने राजनीति से व्यक्ति संबंधों में आए बदलाव एवं व्यवस्था की सच्ची तस्वीर को बेबाकी के साथ प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास किया है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

सन्दर्भ सूची

[1] संपादक कालिका प्रसाद, वृहत हिन्दी कोश, पृ० 952
[2] गिरिराज किशोर, पेपरवेट, पृ० 106–107
[3] वही, आन्द्रे की प्रेमिका तथा अन्य कहानियाँ, पृ० 75
[4] वही, हम प्यार कर लें, पृ० 29
[5] वही, रिश्ता और अन्य कहानियाँ,
[6] वही, यह देह किसकी है ?, पृ० 65
[7] वही, पेपरवेट, पृ० 44
[8] वही, यह देह किसकी है ?, पृ० 164
[9] वही, हम प्यार कर लें, पृ० 93
[10] वही, रिश्ता और अन्य कहानियाँ, पृ० 90–91